



हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय Central University of Himachal Pradesh

धौलाधार परिसर-1, धर्मशाला, जिलाकांगड़ा, हिमाचल प्रदेश – 176215
DHAULADHAR CAMPUS-1, DHARAMSHALA, DISTRICT KANGRA, HIMACHAL PRADESH –176215
Phone No. 01892-229574; Fax No. 01892-229331; E-mail: registrar.cuhp@gmail.com

प्रेस नोट

जैविक विविधता के संरक्षण और अधिनियमों पर हुई चर्चा

वैद्य सुषेण क्लब की ओर से जैव विविधता पर ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन

दिनांक—28.01.2023

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के पादप विज्ञान विभाग के वैद्य सुषेण क्लब की ओर से "जैव विविधता संरक्षण: पुनरावलोकन और संभावना" विषय पर एक ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया। इस संगोष्ठी का आयोजन हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के स्थापना सप्ताह के अवसर पर प्रो. प्रदीप कुमार, डीन स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज और डीन एकेडमिक्स के मार्गदर्शन में किया गया। प्रो. सरोज अरोड़ा, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर इस संगोष्ठी के मुख्य वक्ता रहें, जिन्होंने "जैव विविधता संरक्षण: रेट्रोस्पेक्ट एंड प्रॉस्पेक्ट" विषय पर अपने बहुमूल्य ज्ञान को साझा किया।

उन्होंने कहा कि हमें जैव विविधता का संरक्षण क्यों करना चाहिए, इसे जैव विविधता की मूल अवधारणा को जानकर इस अवधारणा को आसानी से समझा जा सकता है। विभिन्न प्रकार के जानवर, पौधे, कवक और यहां तक कि जीवाणु जैसे सूक्ष्मजीव जो हमारे प्राकृतिक वातावरण को बनाते हैं, सभी को जैव विविधता के रूप में जाना जाता है। ये विभिन्न प्रजातियां और जीव चीजों को संतुलन में रखने और जीवन का समर्थन करने के लिए जटिल वेब-जैसे पारिस्थितिक तंत्र में सहयोग करते हैं। प्रकृति में वह सब कुछ जिसकी हमें जीवित रहने के लिए आवश्यकता होती है, जिसमें भोजन, ताजा पानी, दवाएं और आश्रय शामिल हैं, जैव विविधता द्वारा समर्थित हैं। इस जीवमंडल में विविध जीव मौजूद हैं जिन्हें वर्गीकरण के अलग-अलग 5 जगत में वर्गीकृत किया जाता है। इन जगतों में मोनेरा, प्रोटिस्टा, कवक, पादप और जन्तु शामिल हैं। इन जगतों में शामिल विभिन्न जीवन रूपों को उनके पोषण के तरीके, कोशिका संरचना, पोषण के स्रोत और शरीर संगठन के अनुसार वर्गीकृत किया गया है। जैव विविधता के महत्व को समझने के लिए ये सभी पुनरावलोकन महत्वपूर्ण हैं। चूंकि पौधे स्वपोषी होते हैं और उनकी वृद्धि अनिश्चित होती है; वे पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस संपूर्ण पादप साम्राज्य में शैवाल, ब्रायोफाइट्स, टेरिडोफाइट्स, जिम्नोस्पर्म और एंजियोस्पर्म की विभिन्न प्रजातियां शामिल हैं।

उन्होंने कहा कि वनस्पतियों और जीवों की यह सभी विविधता मेगा विविधता में योगदान करती है। दुनिया में विभिन्न प्रकार के पौधे पाए जाते हैं जैसे कि सिकोइया सेपरविरेंस जो सबसे ऊंचा पेड़ है, सिकोएडेंड्रॉन गिगेंटम जो सबसे विशालतम पेड़ है, वोल्फिया एंजस्टा जो सबसे छोटा फूल वाला पौधा है और रेफ्लेशिया अर्नोल्डी जो दुनिया का सबसे बड़ा फूल देने वाला पौधा है। इन विविध पौधों का सौंदर्य मूल्य और महान पारिस्थितिक महत्व है। वे विभिन्न ऊंचाई पर मौजूद हैं और विभिन्न आवासों का उपनिवेश कर सकते हैं और इस प्रकार पारिस्थितिक उत्तराधिकार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान दुनिया में, सभी जैविक प्रजातियां लगातार खतरे में हैं। मानवजनित गतिविधियों से उत्पन्न विभिन्न प्रदूषक प्रजातियों के अस्तित्व के लिए समस्याएँ पैदा कर रहे हैं। भारत में लगभग 17500 फूल वाले पौधे अब संकटग्रस्त हैं। इन पौधों के संरक्षण के लिए विभिन्न संरक्षण विधियों का उपयोग किया जाता है जैसे कि गैर-स्थानिक संरक्षण जिसमें चिड़ियाघर, वानस्पतिक उद्यान, वन विहार आदि जैसे विभिन्न बाहरी संरक्षण को प्राथमिकता दी जाती है। राष्ट्रीय उद्यान, वन्यजीव अभ्यारण्य, पवित्र उपवन, बायोस्फीयर रिजर्व और रामसर

स्थल जैसे इन-सीटू मोड वनस्पतियों और जीवों के संरक्षण में लाभकारी हैं। इन सभी संरक्षित क्षेत्रों में कड़े कानून बनाए गए हैं जहां अवैध शिकार और अन्य गतिविधियों को नियंत्रित किया जाता है। विभिन्न राष्ट्रीय कानून जैसे वायु (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम 1981, जैविक विविधता अधिनियम, 2002 और पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 2002 एक स्थायी तरीके से जैविक संसाधनों के उपयोग को विनियमित करने के लिए मौजूद हैं। हिमाचल प्रदेश के अपने कानून भी हैं जैसे हिमाचल प्रदेश वन उपज अधिनियम 1982, जो वन उत्पादों के सतत उपयोग की देखी करता है। अंत में प्रो. सरोज अरोड़ा ने जैव विविधता में हमारी भागीदारी और हम इसे कैसे संरक्षित कर सकते हैं, के बारे में जानकारी दी।

Dharamshala. Vaidya Sushen Club, Department of Plant Science, Central University of Himachal Pradesh organized a webinar on "Biodiversity Conservation: Retrospect & Prospect".

Vaidya Sushen Club, Department of Plant Science, organized an online seminar on the topic "**Biodiversity Conservation: Retrospect & Prospect**" on 25, January 2023. This seminar was organized on the occasion of Foundation Week of the Central University of Himachal Pradesh under the guidance of Prof. Pardeep Kumar, Dean School of Life Sciences and Dean Academics. Prof. Saroj Arora, Guru Nanak Dev University, Amritsar was the key speaker of this seminar who shared her valuable knowledge on the topic of Biodiversity conservation: Retrospect & Prospect.

Why we should conserve Biodiversity. This concept can be easily understood by knowing the core concept of biodiversity. The variety of animals, plants, fungi, and even microorganisms like bacteria that make up our natural environment are all included in what is known as biodiversity. These various species and organisms collaborate in complicated web-like ecosystems to keep things in balance and support life. Everything in nature that we require for survival, including food, fresh water, medicines, and shelter, are supported by biodiversity. There are diverse living organisms present in this biosphere which can be classified into distinct 5 kingdoms of classification. These kingdoms include Monera, Protista, Fungi, Plantae and Animalia. Various life forms included in these kingdoms are categorized according to their mode of nutrition, cell structure, source of nutrition and body organization. All these retrospects are important to understand the importance of biodiversity.

Since plants are autotrophs and have indeterminate growth; they play an important role in maintaining ecological balance. This entire plant kingdom comprises of different species of Algae, Bryophytes, Pteridophytes, Gymnosperms and Angiosperms. All of this diversity of flora and fauna contribute to Mega diversity. Plants like *Sequoia sempervirens* is the tallest tree, *Sequoiadendron giganteum* is the largest tree, *Wolffia angusta* is the smallest flowering plant and *Rafflesia arnoldi* has the world's largest flower. These diverse plants have aesthetic value and great ecological importance. They are present at different altitudes and can colonize various habitats and thus play important role in ecological succession. In the present world, all biological species are under constant threat. Various pollutants generated by anthropogenic activities are

creating problems for the survival of species. About 17500 flowering plants in India are endangered now. We cannot afford the loss of any plant that exists on this planet.

Various *ex-situ* conservation methods such as Zoos, Botanical gardens, Van Vihars, etc. should be prioritized. *In-situ* modes such as National Parks, Wildlife sanctuaries, Sacred groves, Biosphere reserves, and Ramsar sites are beneficial in the conservation of flora and fauna. There are stringent laws enacted in all these protected areas where poaching and other activities are regulated. Various national laws such as Air (Prevention and control of pollution) act 1981, Biological Diversity act, 2002, and Environment Protection Act, 2002 are present to regulate the use of biological resources in a sustainable manner. Himachal Pradesh has also its own laws such as Himachal Pradesh forest produce act 1982, which overlooks the sustainable utilization of forest products. At last Prof. Saroj Arora educated us about our involvement in biodiversity and how we can preserve it.

सुजा अरवी

जनसंपर्क अधिकारी (पीआरओ)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला